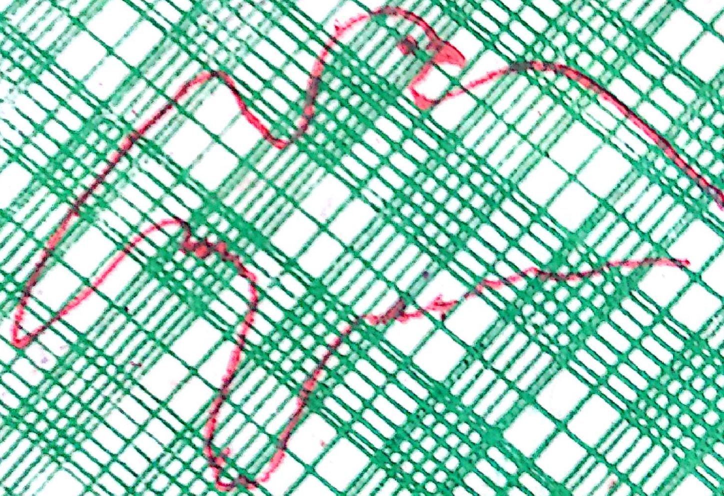
शांति-दूत



—रामाय

शांति-दूत

—रामायण सिंह

सन् १९८७ ई०

रेखा चित्र - राना परबीन

दो शब्द

शांति दूत आपके हाथ में है। पाठकों से मेरा विनम्र निवेदन है कि पूर्वाग्रह-मुक्त होकर इसका अनुशीलन करें तो यह अवश्य रास आयेगी। मेरी चेष्टा रही है कि भाषा अति सरल हो ताकि सामान्य पाठक भी इसका आस्वादन कर जीने की राह चुन सकें। आज नाभिकीय अस्त्रों की गरज से दुनिया चिन्तित है, मानव जाति मिटने को है। देशों के शासक वर्ग स्वार्थ में लिप्त हैं। ऐसी स्थिति में कोई विवेकीपुरुष तटस्थ नहीं रह सकता , नहीं रहना चाहिये। स्थिति की अनदेखी संकट को निमन्त्रण है। इस दशा में शांति दूत मानव जगत का कुछ भी कल्याण कर सका तो तो मैं अपना श्रम सार्थक समझूंगा।

अन्त में मास्को रेडियो के भारतीय विभाग के कर्मी 'गलीना' के प्रति इतना ऋण ज्ञापित कर देना योग्य है जिनके पत्र की प्रेरणा से यह कार्य सम्भव हो सका। पत्र मेरी पूंजी है।

विनीत—

रामायण सिंह

६-११-८७

विद्यालय अखलासपुर
आ-रोहतास
बिहार

विषय सूची

—:o:—

समर्पण

अस्त्रों के जो बीच सींचता
सदा शांति का उपवन;
करता है संघर्ष हर्ष से
पतझड़ में बन मधुवन।
शांति दूत की सेवा अर्पित
है उस अभियानी को;
शूल बीच बन फूल उगे
सौरभ के सेनानी को।

स्नेहाधीन
रामायण

जय हो अक्टूबर महान की

अपने प्रबल वेग से जिसने जग-धारा को मोड़ दिया।
आर्थिक संरचना से जग को नव विकास में जोड़ दिया।।
रूसी मजदूरों ने जगकर पहला फाटक तोड़ दिया।
लेनिन की अगुआई में वह सबको पीछे छोड़ दिया।।
जय हो इस स्वर्णिम विहान की।
जय हो अक्टूबर महान की।।

विशाल देश के शासन पर अब मजदूरों का आसन है।
इसी क्रांति से संभव जग में जनवादी सुशासन है।।
पूँजीवादी जनवादी शासन का पर्दाफाश किया।
उत्पीड़न से त्रस्त सभी जनगण को नव विश्वास दिया।।
जय हो समता के जहान की।
जय हो अक्टूबर महान की।।

अक्टूबर की महान क्रांति ने पूरब को भी जगा दिया।
जिसने संघर्षों से सुख भोगी स्वामी को भगा दिया।।
अक्टूबर की महान क्रांति ने विश्व शांति को जन्म दिया।
समता ममता को अपना सबको जीनेका मर्म दिया।।
जय हो शांति महाभियान की।
जय हो अक्टूबर महान की।।

युद्ध नहीं अब शांति चाहिए जिसने अपना नियम बनाया।
यत्र तत्र सर्वत्र देखलो शांति मार्ग का पाठ पढ़ाया।।
संकट में भी खूब उबारा सब देशों को मित्र बनाया।
अक्टूबर की महान क्रांति ने मैत्री का दृढ़ भित्ति बनाया।।
जय हो मैत्री के प्रतिमान की।
जय हो अक्टूबर महान की।।

शांतिपूर्ण सह जीवन में विश्वास तुम्हारा अटल रहे।
नूतन चिन्तन का प्रकाश जब तक धरती का पटल रहे।।
तेरे चिर प्रयास से होगी निश्चय अगली सदी ललाम।
कवि का आशीर्वाद रहेगा लेनिन तुमको लाल सलाम।।
जय हो जग के महाज्ञान की।
जय हो अक्टूबर महान की।।



हम चलेंगे गाँव की जनता जगाने को

आज रोता देश का इतिहास है उसमें
पूर्वजों के मूल्य का अति ह्रास है उसमें
लोभ है पाखण्ड अंध विश्वास है उसमें
पर भविष्यत् के लिए भी आश है उसमें
हम चलेंगे प्रगति का सन्मार्ग लाने को।
हम चलेंगे गाँव की जनता जगाने को।।

देश के तुम नौनिहालों मत बनो सेंमर का फूल।
आँख मूंदे हाथ भाँजे बन गये गलियों की धूल।।
विश्व का आह्वान है कि तुम मिटा जन-जन का शूल।
बुद्ध गाँधी और नेहरु का सबक जाओ न भूल।।
हम चलेंगे विश्व हित का गीत गाने को।
हम चलेंगे गाँव की जनता जगाने को।।

सब जियें अब एक होकर यह समय की माँग है।
या मरें सब यूथ में ही यह समय की माँग है।।
तीसरा विकल्प कोई है नहीं यह जान लें।
यदि बिवेकवशेष है तो शर्त्त यह भी मान लें।।

सब चले अब यह सबक जग को बताने को।
हम चलेंगे गाँव की जनता जगाने को।।
नव जवानों विश्व की नजरें तुम्हीं पर हैं लगीं।
लीं जभी अंगड़ाई तुमने देश की काया जगी।।
जब दिया ललकार तुमने द्रव्य की माया भगी।
आज अस्त्रों की गरज से मृत्यु की साया ठगी।।
तो सुनो साथी हमारे साथ आने को।
हम चलेंगे गाँव की जनता जगाने को।।

—:०:—

शांति के प्रति

आओ-आओ
युग की पुकार सुनो
देर न हो
अबेर न हो
समय कह रहा—
अंधेर न हो।
हिरोशिमा का उठता धुंआ

कहता —
खोदो मत मौत का कुंआ
सोचो
हमारे बच्चे जो उमर के कच्चे हैं
पर दिल के सच्चे हैं।
होंगे समझदार
बनायेंगे नई दुनियाँ
पर दुनियाँ रहेगी भी ?
निराश न हो कवि
रवि है तो छवि है
दीखतीं नहीं लाल-लाल चिनगारियाँ
जालिया वाला बाग से उठती हुई
सुनो
ध्यान से सुनो
कुछ कह रही हैं।
अरोरा स्मोलनी से आती आवाज
एकाकार होकर गूंजती हैं
संभव है होठों पर
सिसकियों का होना
पतझड़ में ठूंठे पेड़ों के समान
संभव है गाँधी और इन्दिरा को खोना
पर,
शायद सुना नहीं

खून का एक-एक कतरा
रंग लायेगा ?
पेंड रहता है
हरे पत्तों में सजा हुआ
गर्मी-धूप
ताप और शीत
में मँजा हुआ
हम तुम सभी उसकी छाँह में
प्यार और मैत्री के उठे बांह में
देखते हैं—
आशा से भविष्य को
शांति विश्व में छा जाये
शांति विश्व में अवश्य छाये
क्योंकि,
हमारा आपका सबका दिल पुकारता है।

—:०:—

चाचा नेहरु तुम्हें प्रणाम

जग में समय-समय पर ऐसे महापुरुष होते हैं।
दिव्य शक्ति से जो जग का इतिहास बदल देते हैं॥
होती जिनसे धरा मुक्त दुष्कर्मी के पापों से।
भारत वैसे हुआ मुक्त गोरों के अभिशापों से॥
गांधी का प्रभाव था नेहरु पर लेनिन भी प्यारे थे।
दिया आधुनिक रुप देश को ऐसे पूज्य हमारे थे॥
बच्चे कर्णधार हैं जग के उनको वे अति प्यारे थे।
बाल दिवस को याद करें सब ऐसे देव हमारे थे॥
बालक ही हैं नींव जगत के नेहरु जी ने बता दिया।
बच्चों के आदर में ही निज जन्म-दिवस को भूला दिया॥
हम कृतज्ञ हैं उस विभूति के जिसने हमको मान दिया।
जग सोया था तभी हमें नेहरु जी ने पहचान लिया॥
कैसे पीछे रहें सोवियत जन महत्व को भांप लिया।
बच्चों के महत्व को जिसने सद् विवेक से माप लिया॥
लेनिन का यह कथन कि शिशु अन्तर्जग के होते हैं।
रहे त्रास से मुक्त नींव भावी जग के होते हैं॥
आज आणविक अस्त्रों पर बैठी दुनियाँ है लरज रही।
पर सोयी नेहरु की आतमा इसे देखकर गरज रही॥
सावधान बच्चों तेरे चाचा को भार निभाना है।
दि

भारत-सोवियत जनगण को अब एक मंच पर आना है॥
विश्व-शांति के लिए एक होकर आवाज उठाना है।
जियें-मरें अब एक यूथ में यह कर्तव्य निभाना है॥
रहे विश्व में शांति तभी तो होगी अगली सदी ललाम।
तभी विश्व में स्वर गूंजेगा-चाचा नेहरु तुम्हे प्रणाम॥

—:०:—

मधुर शाँति आने को है

देवलोक से अनुपम भूमि हमारी मानी जाती है।
शस्य श्यामलां वन्दे मातरम् से पहचानी जाती है॥
राम कृष्ण बुद्ध गांधी ने यहीं कहीं अवतार लिया।
शोषण-उत्पीड़न से निज मानवता का उद्धार किया॥
मिटा आततायी रावण को सीता का उद्धार किया।
किया शमन शोषक कौरव का गीता का प्रचार किया॥
ठुकराया ऐश्वर्य जिन्होंने मानवता को तार दिया।
गांधी की आंधी ने तो गोरे मदान्ध को मार दिया॥
शोषित और उपेक्षित जनता का सम्मान बचाना था
धन्य भूमि भारत की जिसमें महाजनों को आना

शांति-कार्य के लिए विश्व में एक स्थान बनाना था।
मानवता के लिये मरें हम जग को पाठ पढ़ाना था॥
गीता रामायण कुरान में इसी पाठ का लेखा है।
अध्यात्मिक अस्मिता से निज मूल्यों को सवरते देखा है॥
तुलसी सूर कबीर जायसी का अंकित भी रेखा है।
दिया प्रेम का मंत्र जगत में इतिहास का लेखा है॥
अध्यात्मिक अवरोध प्रगति में रहा इसे इन्कार नहीं।
पर असत्य था उस युग में यह है यह भी स्वीकार नहीं॥
सोयी भटकी मानवता को एक सूत्र में बांध दिया।
जो असाध्य था उस युग की जनता को उनसे साध दिया॥
विश्व-प्रेम के लिए हमें जग में पहचान बनाना था।
मानवता के लिए मरें जो उनमें सूत्र सजाना था॥
लिये लुकाठी हाथ साथ मे नव युवकों को आना था।
जो कुछ तत्व नकारात्मक हैं उन्हे वही जलाना था॥
रहे एकता जनता में ईश्वर तो एक बहाना था।
प्रेम स्वर्ग है प्रेम रुप है खुदा प्रेम को माना था॥
इसके पीछे भारत का पावन इतिहास पुराना था।
सेवा मुक्ति सादगी से ही अपना मार्ग बनाना था॥
करें आक्रमण अन्य देश पर ऐसी कोई चाह नहीं।
भले मरें मां की वेदी पर इसकी भी परवाह नहीं॥
स रहें सुरक्षित नर-जीवन तो कोई बढ़कर राह नहीं।
-दि या यहीं संदेश कहीं नर बलि को मिले पनाह नहीं॥

स्वतन्त्रता के लिये जियें हम स्वतन्त्रता के लिए मरें।
भले खांय घास की रोटी मानव की जयकार करें॥
रहे दास कोई न धरा पर इसका भी प्रचार करें।
करें विश्व को गोलबन्द अस्त्रों पर भी हम वार करें॥
करें युद्ध से मुक्त धरा को हिंसाहीन समाज बने।
रहे न भूखा जग में कोई समतापूर्ण समाज बने॥
धरती के चालक पालक विश्वस्त सभी के आज बनें।
जनवादी समाज से जन आश्वस्त धरा के साज बनें॥
खेतों-खलिहानों में जिसका बहता नित्य पसीना है।
सस्था में हों फैक्टरियों में सबको मिलकर जीना है॥
पूंजीवाद रक्त पर जीता चुसता सदा पसीना है।
साम्राज्यवाद युद्धों पर जीता सबसे वही कमीना हैं॥
धरती के परमाणु अस्त्र को अंतरिक्ष में मोड़ रहा।
जैसे धरती का स्वामी है नहीं कोई अब जोड़ रहा॥
कैसे निबटें यही प्रश्न तो आज हमें झकझोर रहा।
प्रतिदिन करते रहे कमाई उसको सदा निचोड़ रहा॥
पर भावी परिणाम देख मानवता रो उठती है।
होगी ध्वस्त धरा पूरी दानवता कह उठती है॥
भारत माता शांति कामिनी त्राहि त्राहि रटती है।
मनु की संतानों देखो छाती उसकी फटती है।
हंसते नहीं खूब रोते जो समय व्यर्थ खोते हैं।
समय सांस है जीवन का जो नित्य उसे खोते हैं

पाते वही कर्मयोगी जो नित्य लगे रहते हैं।
मिले मधुर जीवन का फल ऐसा ज्ञानी कहते हैं।
शोषक शोषण के आदी जो हिंसा पर हैं तुले हुए।
दीन-दलित शोषित दरिद्र सब जीने पर तुले हुए॥
तो विवेक ही मानव का अब युद्ध बचा सकता है।
आज आणविक अस्त्रों से वह जाति बचा सकता है॥
पर कठोर क्रूर दानव से मानव यहाँ लड़ा है।
है ऐसा इतिहास देख लो जग में यहाँ पड़ा है।
जब-जब हानि हुई धर्म की अत्याचार बढ़ा है।
मानव के परित्राण हेतु अति मानव वहाँ खड़ा है॥
वही समय है साथी गाँधी पुनः आज आने को है।
अत्याचार असह्य हो रहा अब लेनिन आने को है॥
गांधी लेनिन, लेलिन गाँधी कटु हिंसा जाने को है।
कामगार जग के जय बोलो मधुर शांति आने को है॥



दो बहनें

एक बाप की दो बेटी थीं।
मिल-जुल कर वे रहती थीं॥
अपने घर को खूब सजातीं।
जब मिलतीं वे कहती थीं॥

आकर्षक दोनों थीं जग में
सबका आदर करती थीं;
रूप अनूप गुणों से अपने
सबके मन को हरती थीं।

घर की शोभा दुल्हन होती
पर मन का स्वामी भी रहे;
सुख-दुःख की नित बात करे
पर चिन्ता सबकी लगी रहे।

थी तो आयु चालीस की ही
प्यारी छोटी न्यारी थी;
कुल की चिर गरिमासे मंडित
सबमें ही वह भारी थी।

पर स्वामी के व्यवहारों से
रही कभी संतुष्ट नहीं;

उसकी संतानें लड़ती
मानो वे भी हैं तुष्ट नहीं।

भेद भाव की राजनीति है
जन को सदा भुलावा है;
कपट और व्यभिचार विचरते
जन को सदा छलावा है।

पहन श्वेत परिधान शिख पर
टोपी सदा विराज रही;
बनते गांधी के अनुयायी
पर हिंसा का रज रही।

भ्रष्ट आचरण रिश्वतखोरी
बेईमानी भी आज रही;
भूखे पेट अशिक्षित जन को
मिलता कोई ताज नहीं।

भले बेरोजगारी घर में हो
इसकी चिन्ता कभी नहीं;
रहे अशिक्षित जनता तो
सुख में भी होगी कमी नहीं।

सूखा बाढ़ बीमारी भी हो
तब भी कोई गमी नहीं
धर्म जाति के लिये लड़ें सब
पद में होगी कमी नहीं।

माता रो-रो कहती है अब
कच्छप गति का त्याग करो;
रोग-ग्रसित कुंठित सहस्त्र जन
के निमित्त कुछ काम करो।

समय कह रहा जग को देखो
जनता का दुर्भाग्य हरो;
जन सुख में सुहाग-सुख रहता
इससे मेरी मांग भरो।

रहें प्रफुल्लित संतानें
तो मां प्रसन्न रहती है;
उसके सुख-दुख में माता
सहभाग बनी रहती है।

सीमा के अरि के लिये वही
तो आग बनी रहती है;
विश्व-शान्ति के लिये तभी
तो नाम बनी रहती है।

प्रलय काल में जनोत्पत्ति
की सुन्दर है जाति मेरी;
पिला पीयूष जगत को पाली
ऐसी है छाती मेरी।

फैलाया आलोक जगत में
यह भी है थाती मेरी;

महा ग्लानि होती देखो
जब स्वामी ही घाती मेरी।

अश्रु पोंछ कर आंचल से
पीछे से बड़ी बहन बोली;
अश्रु-सिक्त नयनों से देख
धीरे से खड़ी बहन बोली—

"रो मत अभी नहीं बिगड़ा है
मेरी बहन उदास न हो"
छोटी बहन मुड़ी सुनकर
ज्यों कानों पर विश्वास न हो।

तेरी साया बनकर पीछे
नित्य लगी रहती हूं।
बाहर भीतर सभी जगह
मैं साथ लगी रहती हूं।

सुख में दुःख में त्राण मिले
विश्वास बनी रहती हूं;
हों विकास के कार्य अहर्निश
आस बनी रहती हूं।

यह अवश्य है हर मिट्टी में
उगता सरस फूल नहीं;
आस्वादन कर सके फूल का
वैसी कोई धूल नहीं।

पर समता-सम्पन्न राष्ट्र
बनना ही होगा;
सुखी बन सकें सभी लोग
उस मंजिल पर चलना ही होगा।

अस्त्रों की गर्जन से
देखो जग अशान्त है,
बेड़ों की तर्जन से
हिन्द महासागर अशान्त है।

दुर्निवार दुस्तर प्रश्नों से
पहले हमें निबटना होगा,
पागल है यह घड़ी बड़ी
है जग को हमें बताना होगा।

रहे विश्व में शांति
प्रगति में देर न हो,
पूरी होगी आशा
बहन अधीर न हो।

मंजिल दूर न होगी
यदि तुम साथ रहो,
मेरे सत्तर वर्षों पर यदि
तुम अपना विश्वास करो।

माता के मुख पर जैसे
मुस्कान खिल गयी,

सदियों से खोई. कोई
सामान मिल गयी।
मिलकर दोनों बहनें भावी
इतिहास बन गयीं.
तन संयुक्त संपृक्त मना
दो बहनें जग की आस बन गयीं।



भारत का किसान

करता माँ की रखवाली
यह चिंता सदा लगी रहती;
रहे न कोई भूखा जग में
बुद्धि सदा जगी रहती।
पाता क्या बदले में मैं
यह बात किसी से छिपी नहीं;
पर अनदेखा रहा सदा।
कवियोंने भी यह लिखी नहीं।

भूखा पेट नग्न तन लेकर
खेतों में जाता हूं;
शीत ताप की पीड़ा लेकर
प्रतिदिन घर आता हूं।
दो सूखी रोटी लेकर
बेटी जब दौड़ी आती;
उसे देख कर हर्षित होता
आँखें तब खिल जातीं।
वय: भार बेटी की है
यह रोज मुझे ही खाती;
दुर्बल मैना बैला की
अति चिन्ता मुझे सताती।
करु हाथ पीला बेटी का
द्रव्य कहाँ से लाऊं?
फसलें मरीं पेट खाली है
दुखड़ा किसे सुनाऊं?
मालिक के दरबार मे चलू
बिटिया को भी ले लूं,
उसकी उम्र दिखाऊंगा
निश्चय है कुछ पाऊंगा।
दो हजार ही लाऊंगा
सुन्दर घर वर पाऊंगा,

बेटी की जब मांग भरे
तो जग में मुंह दिखाऊंगा।

मेरा अच्छा मुन्ना बेटा
छुट्टी में घर आयेगा,
दिव्य ज्ञान विज्ञान साथ ले
प्रतिदिन मुझे सुनायेगा।

कब लौटेगा भाग्य हमारा
निश्चय मुझे बतायेगा,
जग की घटनाओं से मेरा
परिचय नित्य करायेगा।

पूरी होगी मुन्ना की-
शिक्षा अब तो है देर नहीं,
फल मीठा होता है श्रम का
इसमें कभी अंधेर नहीं।

मुन्ना के समक्ष अपना
दृढ़ निश्चय उसे सुनाऊंगा,
बेटी के विवाह की खुशखबरी
को उसे बताऊंगा।

क्या होगा पत्नी का
जो नित टी.बी. से है जूझ रही,
किस दिन चला जाय जीवन
यह नहीं समस्या सूझ रही।

स्वयं रिक्त सबको भोजन दे
सदा यही थी बूझ रही,
घर में आये मेहमानों में
आस्था बड़ी अटूट रही।

सुखी रहे संसार-कामना
वाली मेरी नारी है।
सभी कामगारों किसान के
दिल की भी वह प्यारी है।

उसके क्लांत श्रान्त होने से
फटती मेरी छाती है,
साथी मेरे उसे बचाना
भारत की वह थाती है।

उठ न जाय वह इस धरती से
दुनियां का है खैर नहीं,
बसुधैव कुटुम्बकम समझी
मानवता से बैर नहीं।

सभी मिलें अब उसे बचायें
शांति तभी बच सकती है,
इस असाध्य पीड़ा से मुक्ति
उसे तभी मिल सकती है।

रहे सुरक्षित शांति सदा
नेहरु का आशीर्वाद है यह,

साथी इसे बचाना मिलकर
लेनिन का वरदान है यह।
आज आणविक अस्त्रों की
गर्जन में यह खोना न पड़े
जगती का पानी पानी-पानी
होकर रोना न पड़े।
इससे होगा हर गुत्थी का
चिर निदान,
जगे रहो वीरों तुम
भारत के महान।
सब जाय सुरक्षित रहे
मगर भारत की शान,
अग्नि में तपकर कहता
भारत का किसान।



सबको मिल हाथ लगाना है।

भग्न हृदय ले खड़ा गगन है
रुदन अधर अति दुर्बल तन है
देखे निज असंख्य नयनों से
जग उदास रो रहा चमन है।
रहा चतुर्दिक व्याप्त अस्त्र है
सभी चाहते नये शस्त्र हैं
हिंसा की तांडव लीला में
भुगत रहा जीवन निर्वस्त्र है।
यहां न कोई अपना है
मारो-काटो जपना है
विश्व-विजयके दिवा-स्वप्न में
प्रेम-अहिंसा सपना है।
कैसे मिले युद्ध से मुक्ति
कोई बताये इसकी युक्ति
सबकी दृष्टि लगी भारत पर
सभी चाहते इसकी सूक्ति।
इसका पावन इतिहास है
मूल्यों में कुछ ह्रास है?

जब भी संकट-ग्रस्त हुआ जग
भारत से ही आस है।

गांधी-नेहरु का अनुगामी
जो सदा रहा शांतिकामी
जग को राह बतायेगा
यह सबका है अन्तर्यामी।

जग नौका का चालक है
शांति-अहिंसा पालक है
आध्यात्मिक शक्ति से अपनी
हिंसा का निवारक है।

इसे किसी से बैर नहीं
जो आँख दिखाये खैर नहीं
धार्मिक समता में रमता है
कभी निरर्थक सैर नहीं।

जहाँ जहाँ यह जायेगा
निज संदेश सुनायेगा
मानव-हित के लिये मरे
सब इसकी राह बतायेगा।

ऐ लोगों मिलकर जी लो
सुधा अहिंसा का पी लो
शांति पूर्ण सह अस्तित्व-
के लिये साथ में तुम होलो।

शांति-शक्ति को डटना है
प्रेम अहिंसा रटना है
शिथिल हुए यदि रंचमात्र भी
पूरे जगत को मिटना है।

शांति हेतु जो लड़ा नहीं
दुनिया में है बड़ा नहीं
सत्य-न्याय के लिये सदा
जब तक होगा वह खड़ा नहीं।

प्रगति राह पर चलना है
दीनों का भाग्य बदलना है
साम्राज्यवाद को दफनाने
अब सबको मिलकर चलना है।

नेहरु का यह देश नहीं
सीमित रह सकता घेरे में
लाल मशाल हाथ में लेकर
देगा ज्योति अंधेरे में

जल विप्लव से संघर्ष किया
पाया नूतन उपहार सदा
रहे सदा चिर शांति जगत में
मां की यह गुहार सदा।

आओ साथी स्वागत है
हिंसा का राज मिटाना है

विश्व बदन के कुष्ठ रोग को
जड़ से मार भगाना है।

नाभिकोय अस्त्रों से देखो
वसुन्धरा आक्रान्त बनी
घृणा अहिंसा भय से पीड़ित
धरती आज अशान्त बनी।

मानवता अरि के पापों से
अन्तरिक्ष भी कांप रहा
दौड़ो लोगों उसे बचाओ
धरती की छत नाप रहा।

अन्तरिक्ष यूरी का सपना
बना रहे यह सबका अपना
रवि, राकेश ने जिसे संवारा
पूरी होगी तभी कल्पना।

साम्राज्यवाद की यह चुनौती
या तो तुम स्वीकार करो,
या धरती के साथ सभी
अब मिटने को तैयार रहो।

हम अमरों के वंशज हैं
दुर्बल ऐसा है भाग्य नहीं
जला सके हमको धरती से
ऐसी कोई आग नहीं।

पुनः कृष्ण की अगुआई में
गोवर्द्धन आज उठाना है,
दुर्वह कार्य नहीं है पर
सबको मिल हाथ लगाना है।

❀

तलवार और शाँति

बड़ी तेज है धार हमारी
मैं ऐसी तलवार हूं,
पाले जो पूंजी शोषण से
उसका ही मैं यार हूं।

रक्षा करूं तिजोरी का नित
मैं वीरों के साथ रहूं,
क्रोध और उन्माद बढ़ाऊँ
जिनके भी मैं साथ रहूं।

पीकर लाल रुधिर मानव का
जीवन यापन करती हूं,

धारक-मारक सभी मरेंगे
शक्ति नहीं जो मांज सके।

दुर्बल भाग्य नहीं दीनों का
जो हिटलर को आने दे;
भले नष्ट हो जाय नहीं
पर शांति अशांति बनाने दे।

इधर देखती सत्वर गति से
जग का तेवर बदल रहा
शांतिपूर्ण सह अस्तित्व का
स्वर होठों पर मचल रहा।

साथ मरें या साथ जियें
दोनों में एक को चुनना है,
जग के इस निश्चय के आगे
निज कर्मों पर गुनना है।

सभी मिलें शाँति-सेना में
जग का रुप बदलना है,
भूखा नंगा रहे न कोई
इसी राह पर चलना है।

बहे प्रणय की धार जगत मे
ऐसा मार्ग बनाना है,
मानव हित के लिए मरे जो
वह कर्तव्य निभाना है।

पड़ी रहे तलवार म्यान में
मनु को सदा बचाना है,
मानव हित के लिए सदा
अर्पित जीवन कर जाता है।

यह अधिकार सभी को है
जो अपने पथ का चयन करे,
नव चिंतन प्रतिमान लिए सब
चिन्ता मुक्त हों शयन करें।

दिया दखल कोई यदि इसमें
होगी उसकी खैर नहीं,
खेलो खेल वही जिसमें हो
मानवता से बैर नहीं।

समता पथ पर जीवन रथ ले
डुगुर-डुगुर चलना है
रामराज्य सर्वोदय का यह
मधुर-मधुर चलना है

फले आस विश्वास जगत का
कदम-कदम जीना है
जीवन भले गरल हो पर
वह घुटुर,घुटुर पीना है।

शांति जगत में छा जाये
यह दृढ़ अरमान हमारा

दीन दलित पीड़ित सुन लो
इसमें सम्मान तुम्हारा।

रिक्त उदर तन नग्न न होगा
असन वसन सम्पन्न बनो
प्रणय-सुरभिसे सुरभित होकर
ज्ञान-धाम प्रच्छन्न बनो।

होगी निश्चय त्रासमुक्त भावी सदी।
हिंसा पीड़ा मिटे मिटेगी त्रासदी।।

—:०:—

महान अक्टूबर समाजवादी क्रांति

जय हो सोवियत देश जहां पर
लेनिन ने अवतार लिया,
श्रम शक्ति मां की भक्ति से
जन-जन को जो तार दिया।

रहा न भूखा नंगा कोई
शोषण-दोहन कहीं नहीं

नव मानव-संसार बस रहा
ढोंगी योगी कहीं नहीं।

सामूहिक सांथीवत बनकर
रहते रमते यहां वहां
यही यत्न रहता उसका
मैत्री सर्व पर यह चले जहां।

जार निरंकुश था कल जिसने
राजतंत्र का दुर्ग दिया,
पूंजी जनवादी क्रांति ने
झाड़ बुहार कर फेंक दिया

पर श्रम का शोषण दोहन
जन-बीच अभी था शेष रहा,
जाति कलह से अर्थ-भेद से
लेबर सबका सना रहा।

भ्रष्ट आचरण रिश्वत का
बाजार गर्म था जहां कहीं
मंहगाई की मार बेरोजगारी
की संख्या कहां नहीं।।

अज्ञान अशिक्षा पीड़ा की
रजनी में जनता भटक रही
सभी प्रगति के साज-बाज
निज जेबों में थी अटक रही।

पूंजीपतियों जमीन्दारों का
शासन अब तो सह्य नहीं,
बहुमत पर अल्पों का शासन
किसी तरह अब ग्राह्य नहीं।

बोल्शेविक आदर्शों से
अनुप्राणित जनता बोल उठी,
महाक्रांति की रण चण्डी ने
घूंघट का पट खोल उठी।

जय बोलो लेनिन महान की
अक्टूबर रणचण्डी की,
मजदूरों किसान जय बोलो
इति करो पाखण्डी की।

सावधान लोगों रहना
पर बहे किसी का खून नहीं,
भले गिरे मस्तक वेदी पर
सहो कभी कानून नहीं।

पूंजीवादी जनवादी क्रांति
तो एक छलावा है,
भरे तिजोरी धनिकों का
निर्वाचन मात्र भुलावा है।

पूंजी जार जमीन्दारों से
एक साथ ही लड़ना है,

बोल्शेविक झंडे के नीचे
श्रमिक वर्ग को अड़ना है।

स्वामी बनें सभी निज श्रमका
ऐसा राष्ट्र बनाना है
प्रथम विजय की लाली का
अनुपम इतिहास बनाना है।

करें अनुगमन सभी देश
अब स्वर्ग धरा पर लाना है,
बुद्धि विवेक ज्ञान प्रतिभा
जागर की कीमत पाना है।

धरती की जो मांग संवारे
वह किसान भी साथ रहे,
दोनों की मैत्री से ही
जन-क्रांति सदा सनाथ रहे।

जगें परस्पर प्रेम-नेम
का पालन जनता करे सदा,
भेद-भाव का उन्मूलन हो
सबकी सदा करे बिपदा।

नौकरशाही लापरवाही सख्ती
की जब चोट लगे,
अस्वीकार्य सदा यह बनती
जनता की तब नियति जगे।

मुक्त देश में मुक्त कार्य-
चिन्तन का नव विश्वास जगे,
जनवादी समाज में सबसे
अनुशासन की आस जगे।

जनता ने जब ली अंगड़ाई
पूंजीवाद विनष्ट हुआ,
भाग्य दैव की देन? यहाँ से
सदा के लिये ध्वस्त हुआ।

विश्व सर्वहारा का नेता
वसुन्धरा का प्रमुख सुचेता,
दिव्य शक्ति वाला लेनिन
जो बना शांतिका प्रथमप्रणेता।

समाजवाद की रश्मि खिली
जिसके अद्भुत सत्कर्मों से
विश्व सर्वहारा शिक्षक था
मार्क्सवाद के मर्मों से।

चिर प्रकाश नूतन शक्ति से
बना रहा इतिहास सदा
नतमस्तक हो रहे सभी
लेनिन जीओ तुम यहां सदा।

हम नूतन सदेश लिये
घर-घर में पहुंचायेंगे,

वाद अमर है लेनिन का
सबको यह बतलायेंगे।

जाओ साथी याद रखेंगे
हम कृतज्ञ भारत वासी
जिसके दिव्य ज्ञान से पूरित
स्वतंत्रता के अभिलाषी।

यह विश्वास तुम्हें देते हैं
मुक्ति-कार्य में देर नहीं,
समता के पथ पर पहुचेंगे
इसमें कभी अंधेर नहीं।

'पेरेस्त्रोइका'❀ का दर्शन ले
भावी पथ पर बढ़े चलो
देगा दिव्य ज्ञान जग को नित
जीवन रथ पर चढ़े चलो

पर अटूट मैत्री के पथ पर
जीवन बढ़ता रहे सदा,
विश्व शांति की क्रांति लिये
हम सम रसता को गढ़ें सदा।

नाभिकीय अस्त्रों से पीड़ित
सारा विश्व अशान्त बना
भूख बेरोजगारी से कुंठित
सारा जग है क्लान्त बना।

❀ पुनर्गठन

हिंसा रहित शस्त्रास्त्रों से मुक्त
विश्व को रचना है,
आज समय की प्रमुख मांग है
शांति विश्व में पचना है।

मुक्ति हेतु जग की बेदी पर
जो कुछ हो मैं काम आ सकूं
जग में नव विश्वास भरुं
यह सेवा मैं निष्काम कर सकूं।



सत्याग्रह और शांति

देख लो जग का नया विज्ञान,
मुक्ति-दर्शन का अनूठा ज्ञान।
सत्य आग्रह जागरण का मंत्र,
तन बचन मन का अनोखा यंत्र।
देश भाषा शौर्य का है तंत्र
जर्क इन्हे भूले हुए परतंत्र।

सत्य का आग्रह हमारी शान,
पूज्य बापू का यही वरदान।
कायरों का है नहीं यह शस्त्र,
शौर्य का प्रवहमान धार अजस्त्र।
सत्य का आग्रह रहा है शांति की पहचान
रक्त-आप्लावित नहीं जन दें भले ही जान
चूम लो मिट्टी धरा की पुण्य इसका चित्र,
मूर्त्त है माँ का बदन सप्राण है यह चित्र।
पर कटा कैसे बदन यह प्रश्न है विचित्र,
मां कटी जनता कटी दो टूक इसके चित्र।
देश के अन्तर्कलह से हो गयी बेजान,
सत्यके विचलनसे इसकी मिट गयी पहचान।
घोर साम्राज्यवाद का षड़षंत्र,
क्रूर सम्प्रदाय का था यंत्र।
सह नहीं सकता प्रजा का तंत्र,
हो गया विस्मृत जहां वह मंत्र॥
सत्य मुंह के वल गिरा तब हो गया बेजान,
देखते ही रह गये इसकी निकलती जान।
घूंट पीकर धर्म की,
लड़ते परस्पर लोग हैं।
जाति भाषा अर्थ का,
उन्माद फैला रोग है॥

चाहते निदान करना,
शस्त्र उनका भोग्य है।
पर उन्हें यह ज्ञान क्या,
उपचार ही अयोग्य है।
सत्य का आग्रह सर्वथा शांति का पर्याय,
विश्व में सुख भोग का वह एक मात्र उपाय।
शांति-रक्षा में सुरक्षित प्राण,
दीन-दलितों को मिले परित्राण।
सत्य का आग्रह करे कल्याण,
युद्ध-बादल करे क्षिप्र प्रयाण।
सत्याग्रह है सर्वोदय का प्राण,
शांति समाजवादका आदर्श महान।
हम बचायेंगे इसे दें प्राण अपना,
इन्दिरा प्रियदर्शिनीका मधुर सपना।
शांति वह माला नहीं,
जो मौन हो फेरे।
शांति सह जीवन है,
जिसको शस्त्र है घेरे।
शांति के अरि के,
जिन्हे है पूंजी के फेरे।
शांति बच सकती है,
युक्त प्रयास से तेरे॥

हम पुनर्निर्माण की ज्योति जलायेंगे,
नित नया मानव नई दुनियां बसायेंगे।
शांति है संघर्ष जीने का,
सौम्य-सुख का अमिय पीने का।
योग्य भोक्ता हो पसीने का,
खुद चुने निज मार्ग जीने का॥
हम शांति के वीर सिपाही,
सत्याग्रही महान।
सत्य हेतु हम मिट जायेंगे,
देकर के निज प्राण॥
हमें सत्य पर डटना है,
जग का भाग्य पलटना है।
नाभिकीय अस्त्रों से जग को,
सबसे प्रथम निबटना है॥
सत्याग्रह बीच का पथ है,
भटक रहा नीति का रथ है।
आओ आज यही सत्पथ है,
दुनिया शस्त्रों में जो रत है॥
साम्राज्यवाद को दफनाने हम चलें सभी के साथ,
अगर नहीं तो मेरी सुनलो जग होगा अनाथ।
जो होते हैं नव स्वतंत्र,
चुनना होता है नया तंत्र।

खिचता है अपनी ओर यंत्र,
तब दर्शन बनता यही मंत्र॥
जुर्म के आगे सत्याग्रही नहीं झुकते;
हृदय बदलनेतक लड़ते हैं कभीनहीं रुकते।

लाठी-गोली में नहीं विश्वास,
मधुर बोली में जगाता श्रास।
यह न समझो ले लिया सन्यास,
कर्म में निज नीति का है न्यास॥
समय बदलता रहता है बदलजहाँ,
युग-सत्य से ही आग्रही वदला वहाँ।

हिंसा है शोषण-दोहन
भले लगे वह मन-मोहन
नहीं उसे अब सहना है,
दो टूक हमे सब कहना है॥
परस्पर लाभ की शर्त्त अगर तुम मान लो,
तो चलेगा आपसी ब्यापार यह भी मान लो।

न्याय का मर्दन अगर होता कहीं,
खून मेरा खौल उठता है वहां।
सत्य के रक्षार्थ जाता जो कहीं,
देश मेरा दौड़ पड़ता है वहां॥
देख लो अभियान शांति का चला है,
बन चलो सहभाग तुम इसमें भला है।

कवि से

जरा जर्जर जगत देखो जल रहा है.
पर मही पर मन-मयूर मचल रहा है।
सोचता शायद कि आगे न रहे,
भावना के भार को वह क्यों सहे।
समय रहते प्रेम की पीड़ा अगर वह न कहे,
क्या पता फिर जन्म लेने को धरा ही न रहें?
और फिर मनु को जवाब भी तो चाहिए,
चलते हैं तो अदब में आदाब भी तो चाहिए।
मनु की सन्तानों का शबाब भी तो चाहिए,
जीने के लिए दर्शन की शराब भी तो चाहिए।
अब तक मन मेघाच्छादित गगन में रमा रहा,
वसन्त के गलियारे में, फूलों की गोद में समा रहा।
अब तो धूमाच्छादित नभ है,
सागर में तूफान है।
गोलों की धाँय-धाँय
चलता अग्नि बाण है।
पूंजी की बड़ाई है,
अस्तित्व की लड़ाई है।

अन्तरिक्ष पर चढ़ाई है,
छुटता इन्सान है।।
जन का कसाला अब तेरा मशाला है,
चूके जरा भी तो रखा दुशाला है।
भूख, मंहगाई, बेरोजगारी से जो जूझे नित,
रहते अनदेखे तो लगता दिल काला है।
जनता से इश्क है
सामाजिक मस्तिष्क है।
लेखनी वलिष्ट है,
परिचय पुराना है।
जन से दुराव नहीं,
भाव का अभाव नहीं।
नाभिकीय अस्त्र को,
उद्दीपन वनाना है।।
आहत जनता की अश्रुपूर्ण आँखों में—
पढ़कर यदि झांकोगे भविष्य मुस्करायेगा।
पूंजी की कुंजी से सौंदर्य यदि ढूंढोगे,
तो यह भी विश्वास है मनुष्य फिर न आयेगा।
रवि का प्रकाश है,
जग को यह आश है।
धरती का कोना,
न बाकी रह जायेगा।।

जब भी तुम झांकोगे,
अंधकार भाग जायेगा।
सागर धरा की क्या,
अन्तरिक्ष मुस्करायेगा।
प्रलय की गोद से उबरा है मोद से,
लड़ता पयोद से मनुष्य फिर न आयेगा।
छोड़ो निज स्वार्थ को देखो यथार्थ को,
दुर्लभ है जाति यह मनुष्य फिर न आयेगा
दुनिया है मोड़ पर हथियारों की होड़ पर,
पूर्वाग्रह छोड़कर दौड़कर न आओगे।
नाता को जोड़कर भय से वह तोड़कर,
संस्कार छोड़कर कायर कहलाओगे।

—:०:—

अन्तरिक्ष

अन्तरिक्ष है सबका अपना,
यूरी गागारिन का सपना।
रवि, राकेश ने इसे संवारा,
पूरी करते सदा कल्पना॥

स्पुतनिक का नाम अमर है,
जिसने जीता प्रथम समर है।
जग ने सुना रूस का स्वर है,
जिसने किया प्रशस्त डगर है।

स्पुतनिक तो अन्तरिक्ष की,
प्रथम विजय की लाली है।
शांति कामना वाली जग की,
प्रेम-नेम मतवाली है।

जिओ अमर गागारिन जिसकी,
प्रथम वोस्तोक सवारी थी।
जिसने किया उजागर पथ को,
कीर्ति गगन की भारी थी॥

अन्तरिक्ष है छत दुनिया की,
सदा सुरक्षित बना रहे।

शांति अहिंसा का चंदोवा,
इसी तरह से तना रहे॥

बालेन्तीना तेरेश्कोवा,
प्रथम सोवियत नारी है।
निर्विकार निर्मल नभ का नित,
जिसने किया सवारी है॥

नहीं पुरुष से कम है नारी,
जिसने जग को बता दिया।
समाजवाद की यह उपलब्धि,
विश्व-जनों को जता दिया॥

अन्तरिक्ष की प्रगति हमारी,
कभी न रुकने पाये।
समाजवाद का लाल फरहरा,
कभी न झुकने पाये॥

आध्यात्मिक शक्ति भारत की,
देवों का विश्राम-स्थल है।
आत्मा जहाँ शमित होती,
मुनियों का जो वैकल्य-पटल है।

रहे अस्त्र से मुक्त धरा,
सर्वत्र शांति का राज रहे।
जीने के अधिकार के लिए,
क्रांति सदा विराज रहे।

"जग-नौका के चालक जब तक,
मिलजुल कर तुम साथ रहो।
यह विश्वास तुम्हें देते हैं,
धरती कभी अनाथ न हो"
अन्तरिक्ष नाविक के अनुभव,
जब तक तेरे साथ रहे।
गगन-धरा की खुशहाली से,
जनता सदा सनाथ रहे॥

नेहरु गांधी का यह भारत,
शांति-प्रेम का योद्धा है।
नाभिकीय अस्त्रों से आरत,
गुट निरपेक्ष पुरोधा है।
अस्त्रों के निर्मम प्रहार का,
कटु प्रतिवाद करेगा ही।
शांति गले का हार रही,
जन में रसधार भरेगा ही।

शानदार इतिहास हमारा,
खड़ा अग्नि में तपने को।
शोषण-उत्पीड़न से नित,
जन का दुर्भाग्य पलटने को।
बढ़ो वीर भारत की शांति सेना।
सरल है सफर साथ है लाल सेना॥

—:०:—

रेंगता रथ

हाल उतरने को है;
माल सरकने को है,
काल ग्रसने को है
चाल बदलने को है।
पहुंचने की बेताबी है
याद दिलाती रावी है,
सारा ज्ञान किताबी है
शायद यही खराबी है।
पिछला अच्छा संस्कार है
भूखों की पड़ती मार है,
विश्वासी मिला यार है
पर रास्ता बेकार है?
अपने छुट रहे हैं
नाते टुट रहे हैं,
दूसरे जुट रहे हैं
मिलकर लूट रहे हैं।
भयमुक्त बनाने का वायदा
सर्वोत्तम है यह कायदा,

पर नहीं है इसका जायका
जिससे होगा इससे फायदा।
सभी मिलें वक्त कहता है-
रास्ता ठीक करें रथ कहता है
मनमानी मत करो पथ कहता है
उसकी भी सुनो जो जुर्म सहता है।

आधी उम्र पार है
जीना दुश्वार है,
बेरोजगारी की मार है
पर बोलना बेकार है।
तरसता है मन देखकर
दूसरों को चांद पर जाते,
पसरती है भावना कि
हम भी फाँद कर जाते।

छलाँग !
इसपार है लगाम,
भारत में न लो नाम
पूर्वज होंगे बदनाम।
आधी उम्र अभी बची है
नयी उक्ति रची है,
दूसरों की भी पची है
शांति की धूम मची है।

भूत से मोह है
पूंजी से छोह है,
मन में ऊहा पोह है
शांति की टोह है।
गरीबी से लड़ेंगे
मिटायेंगे त्रासदी,
साफ पाक होकर
लायेंगे इक्कीसवीं सदी।

–:०:–

आज रोने दो मुझे

आज रोने दो मुझे
मेरे हृदय की तार बोले,
टीस सी उठती हृदय में,
वेदना की धार बोले।
जाति मानव की उजड़ती

शस्त्र की झंकार बोले
आज अस्त्रों की गरज से
शांति का संसार डोले।
रक्त पीपासू मनुज के
हाथ की तलवार बोले
वेदना से ग्रसित नारी-
देह का व्यापार बोले।
नित्य आत्म दाह करती
बालिका की आह बोले
जाति-हिंसा में ज्वलित
आतंक-ग्रसित कराह बोले।
श्रमिक जन को लूटता
शुभ लाभ का व्यापार बोले
भष्ट-रिश्वत से भरा
जन का निठुर संसार बोले।
कर रहे जो नित्य शोषण
की सनकती शान बोले,
जी रहे झुक कर सदा
उनकी तड़पती जान बोले।
मन्दिरों गिरजाघरों में
स्थित वह भगवान बोले

पादरी मुल्लाह की अल्लाह
की पुकार बोले।
राम-भूमि, बाबरी
मस्जिद का विवाद बोले
हो रहीं जबरन सती
नारी विवश की याद बोले।
सबका जनक साम्राज्य है
उस वाद का जल्लाद बोले
सैन्य में वह श्रेष्ठ बनता
विश्व-प्रभु की चाह बोले।
रक्त की खुराक पर जो
जी रहा वह वाद बोले
देश और विदेश में
नित रच रहा फंसाद बोले।
मुक्त पथ के चयन का
सबसे बड़ा व्यवधान बोले
अस्त्र निर्माता जनक
आतंक का प्रतिमान बोले।
अस्त्र का व्यापार
हिंसा का मधुर प्रचार बोले
कर्ज का निर्यात कर

निज लादता विचार बोले।

शस्त्र बल से अतिक्रमण
करता रहा वह यार बोले

श्रमिक शोषण पर पला-
पीसा निठुर संसार बोले।

आज के सबसे बड़े
घातक विषय का सार बोले

रिक्त जन को भय दिखा
निज थामता पतवार बोले।

आज रोने दो मुझे
मेरे हृदय का तार बोले

टीस सी उठती हृदय में
वेदना की धार बोले।

जाति मानव की उजड़ती
शस्त्र की झंकार बोले

आज अस्त्रों की गरज से
शांति का संसार डोले:

—:०:—

बाढ़

देखो आयी बाढ़ प्रलय की याद दिलाती
सहन करो दुःसह प्रहार जन की बर्बादी
कठिन परीक्षा-घड़ी आज आ पड़ी यहां पर
वर्षा की है लड़ी फुहारें जड़ीं धरा पर।
हुई धराशायी दीवार दब गया सुकालू
रोती नारी रोते बच्चे देख सिसकता गया सुकालू।

अगर समय पर राहत मिलती।
उसकी कठिन मुसीबत टलती।।

पर असहाय दीन की चिन्ता कौन करे?
देखो आँख पसार गरीबी जो न करे।

पक्के भवन सुरक्षित रहते।
पर उसमें कितने हैं रहते?
कच्चे घर तो लुप्त हो गये।
वरुण-अंक में सुप्त हो गये।

शासन तो राशन देकर निश्चिन्त हो गया।
मिला किरासन भी कर्मों का अन्त हो गया।।
पर निर्बल परिवार जनों का अन्त हो गया।
अधिकारी के लिये महान बसन्त हो गया।।

चील-गीध खुशहाल हुए
मध्यमवर्गी बेहाल हुए
बड़े महाजन ब्याल हुए
व्यापारी मालोमाल हुए।

धन्य बाढ़ की प्रलय सदा आती रहना।
निर्बल जन को खोज-खोज खाती रहना॥
बना बेकार दीनजन को तुम सस्ता श्रम देती रहना।
राज्य-बजट मोटी होगी ड्यूटी पर सदा तनी रहना॥

पक्की सड़क रेल पटरी भी टूट गयी,
जल समाधि मे श्रान्त पथिक सी जूट गयी।
गाय बैल फसलें सब हमसे रूठ गयीं,
ताल तलैया कई जगह पर फूट गयीं।

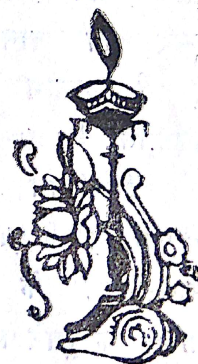
मंड़राते यानों पर मंत्री अवलोकन करते हैं,
जल में घिरे छतों पर बैठे नर-नारी डरते हैं।
डरने की है बात नहीं देखो पैकेट गिरते हैं,
भूखे पेट लपकते गिरते कई लोग मरते हैं।

अहा.! देख लो पैकेट पर है नाम!
संकट में कितना लुभावना काम?
मंत्री को झूठे करते बदनाम
विजयी होकर चुका दिया है दाम।

व्यथा-कथा का अन्त न होगा
जब तक बाढ़-निदान न होगा,

सबके लिए वसन्त न होगा
जब तक समतावाद न होगा।

देखो उफन रही जल-धारा
क्या करता नाविक बेचारा,
छूट गया पतवार हांथ से
जल समाधि का लिया सहारा।



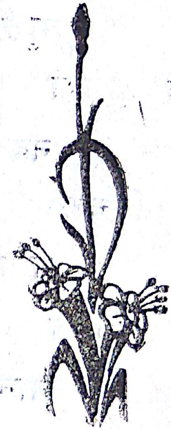
चुनौती

बह रहा है खून
मौन है कानून।
खून बह रहा है दो भाइयों का
परिणाम है आपसी लड़ाइयों का।
अभी-अभी खेलते
शंकर और अनवर
देखते ही देखते
हो गये भयंकर
एक दूसरे का जानी दुश्मन।
सच है-धर्म अफीम की घूंट,
इसीलिए होती है प्राणों की लूट
पीकर अनियन्त्रित भाव से
चलते हैं एक दूसरे के प्रति दुर्भाव से
राम-रहीम के चेले
फेंकते एक दूसरे पर ढेले
जो पहले जिसको ले ले।
शाबाश तुम्हारे पीछे हैं पंजे पुजारी
डरो मत साथ हैं मुल्ले मौलवी

धर्म निरपेक्ष देश है
तटस्थता का वेष है।
सबको अपने धर्म की आजादी है
धर्म पर मरने मिटने की आजादी है;
जाति-धर्म में पले सैनिक भी
अपना-अपना मोर्चा संभाल लेते हैं।
दो किनारों के बीच बहती रक्त की धारा
एक ही मां का पाला पोसा प्यारा,
मां मूक देखती रहती होते जग से न्यारा।
दो किनारे जो कभी नहीं मिलते
कभी नहीं मिलेंगे?
मिलेंगे बनेंगे सागर मानवता का
जहां किनारों की मिटती पहचान
नदियों का होता अवसान
स्वच्छ और गंदे
खारे और मीठे
सबका समाजीकरण एकीकरण
एक विशाल एवं गंभीर सागर
जहां शंकर और अनवर
साथ रहते बनते गुणों का आकर
जहां बड़ी और छोटी नदियां
मिलकर होती है एकाकार

जहां अग्नि सोती है
उच्छृंखल जल को शमित करती है
बनती है अथाह असीम अपार
सभी देशों की यानें जहां होती हैं पार
प्रणय की धार !
शांति का संसार।
सावधान !
अब तो सागर पर संकट ?
बेड़ों से धरती रौंदते नित साम्राज्यी शकट
दौड़ रहे हैं सागर की गहराइयों में
विजय का सेहरा ढूढ़ रहे हैं—
अपनी परछाइयों में
दीखती छाया विशाल गगन का
नील गगन का अनन्त नभ का
जिसमें छोटे बड़े सभी मुस्करा रहे हैं।
साम्राज्य को मुस्कान से नफरत है ?
अब उसकी घिनौनी हरकतें
बढ़ रही हैं अन्तरिक्ष में
महान यूरी जाज्वल्यमान रवि
उदीयमान राकेश मुस्कराती तेरेश्कोवा

सभी देख रहे हैं—
इस जघन्य अपराध को
कर रहे हैं
आकाश सर्वथा मुक्त रहे
यह आह्वान है
यह चुनौती है
सभी शांति प्रिय शक्तियों को



राही

मैं राही हूं शांति मार्ग का
निज संदेश सुनाना है,
करो न मुझको विचलित पथ से
विजय गीत अब गाना है।
मुक्त देश का मुक्त सिपाही
मुक्त मार्ग को चुनना है,
नव चिन्तन विश्वास हमारा
नव कर्मों पर गुनना है।
ढोंग और पाखण्ड विचरते
मानवता का नाम नहीं,
भूख बेरोजगारी से पीड़ित
मानवता बदनाम रही।
भाई हो भाई का प्यासा
दिखता कोई यार नहीं
हिंसा घृणा द्वेष में पलते
कहीं किसी से प्यार नहीं।
मुझे सभल कर रहना है

पथ में बटमार कई आयेंगे,
धर्म जाति का लोभ दिखाकर
मुझे मार्ग से भरमायेंगे।
पर सत्पथ पर कदम हमारा
उन्मुख सदा रहेगा,
निश्चय अडिग रहेगा चाहे
शोणित भले बहेगा।
कुशल सिपाही अपने पथ से
कभी नहीं हटते हैं,
लक्ष्य सिद्धि के लिये सदा
पहले अपने मिटते हैं।
आज विश्व पर जो संकट है
पहले कभी नहीं था,
अस्त्र शस्त्र जैसा है जग में
वैसा कभी नहीं था।
क्षण में नष्ट करे दुनिया को
बचे न कोई रोता,
अतः शांति रक्षा के खातिर
रहे न कोई सोता।
यह संयुक्त यत्न से रक्षित
रहे आज दुनियां में,

जेता और विजित का भ्रम
पाले न कोई दुनिया में।
नहीं किसी से कम है कोई
शोषक हो या शोषित,
आयुध-सज्जित सभी
भले हों जिस विचार से पोषित।
तो विवेक ही मानव का
अब युद्ध बचा सकता है.
जग के प्राणवान सृष्टि में
रास रचा सकता है।
हम पथ के निर्भय राही हैं
ऐसी राह बनायेंगे,
नत मस्तक हों सभी देश
ऐसा संसार बसायेंगे।
नव विज्ञान ज्ञान से नित
नूतन संसार सजायेंगे
शांति दूत टैगोर बुद्ध लेनिन
को सदा सुनायेंगे।
अस्त्र-शस्त्र सज्जित जग में तो
सदा स्वप्न शांति रहती,
कर चाह शांति की बल से

मन की सदा भ्रांति रहती।
शांति दूत लेनिन का अनुभव
सदा हमारे साथ रहे,
क्रांति दूत नेहरु का आशीर्वाद
हमारे साथ रहे।
पुनर्गठन के पथ पर नित
मेरे कदम बढ़ेंगे ही,
शांति-क्रांति की चाह लिए
मंजिल पर नित्य चढ़ेंगे ही।
नहीं झुका सकता कोई भी
निज श्रम बल पर जीना है,
प्रगति मार्ग सन्मार्ग हमारा
सबल मात्र पसीना है।
शांति-वृक्ष की छांह मिले
तो मेरा बल भी दूना है,
प्यार मैत्री की बांह मिले
तो निश्चय मंजिल छूना है।
समाजवाद पर बढ़ते साथी
पथ को सदा उरेह रहें,
भूख रोग से कुंठित जन
छाती को सदा कुरेद रहे।

जग की इस दुर्दिन में कोई
तटस्थ नहीं रह सकता है
शांति-शक्ति आहत देखे
बन मौन नहीं सह सकता है
भारत सदा शांति का रक्षक
भक्षक का प्रतिरोधी है
गांधी का यह देश सदा
हिंसा का महा विरोधी है
सभी शांति कामी शक्ति को
निश्चय हमें जगाना है
अस्त्रों पर जो ऐंठ रहा
हिंसक को मार भगाना है
प्रथम शांति की आज्ञप्ति से
लेनिन हमें कृतार्थ कि
शांति-मर्म भारत का जिसने
छू कर जगत हितार्थ दि
जाति आत्म निर्णय का हक दे
जिसने जग को जगा दि
मुक्त मार्ग का चयन करें
राही को जिसने बता दि

है ऐसा इतिहास हमारा
अगर नहीं हम भूलें तो,
शांतिपूर्ण सह जीवन का
प्रतिमान नहीं हम भूलें तो।
भले व्यवस्था भिन्न रही हो
शांति सदा आदर्श रही,
जग की दृष्टि में भारत की
शांति सदा उत्कर्ष रही।
बने न मानव दानव जग में
सदा शांति का स्वर्ग रहे,
हिंसा घृणा मिटे जग से
इस हेतु पथिक उत्सर्ग रहे।
मिटे गरीबी शोषण जग से
कहता निर्भय यह राही,
शांति सुरक्षित रहे जहां में
सभी बनें इसके राही।
स्वर्ण रश्मि आरेख देख
खिल रहा विश्व-उर पारिजात,
अब राही का मन मधुप बन
चूमने को आतुर पारिजात।

भव सागर में खड़ी कली
अब खिलने को कसमसा रही,
क्रांति निकट बैठी देखो
गोदी में शांति बसा रही।
मुक्त कली हो शीघ्र छली से
मधुर-मधुर ही खिलना है
राही को विश्वास जगत को
प्रणय-सुरभि अब मिलना है।
महा सफर है राही का
त्रासदी विश्व से मिटनी है
व्यर्थ हुई बीसवीं सदी तो
अब दुनिया को मिटनी है
हिंसा-मुक्त विश्व की रचना
हमें आज अब करनी है
कदम मुक्त दीनता से अपनी
इक्कीसवीं सदी में रखनी है



लेनिन

शुद्ध बुद्ध मन जाग्रत लेनिन
तुमको नमन करुँ मैं।१।
मोड़ दिया इतिहास धरा का
अपने दिव्य लगन से
युग द्रष्टा युग श्रष्टा को
नित याद करुं तन मन से
उस बांह की छांह मिले
वाणी का वह संदेश अमर
घिरे जनों के बीच जीतने
जो जाते हैं प्रथम समर
अनल वृष्टि करने वाली
वाणी का स्मरण करुँ मैं
शुद्ध बुद्ध मन जाग्रत लेनिन
तुमको नमन करुँ मैं।२।
शांति-दूत प्रावदा अमर है
पाकर पावन हस्त-स्पर्श
देती शांति-मंत्र दुनिया को

नित्य दिलाती उनको हर्ष
झुके नेत्र दोनो हाथों से
पत्र संभाले देख रहे
ध्यानावस्थित योगिराज सा
नव युग को आरेख रहे
प्रियंवदा प्रावदा सदा
देवी को नमन करु॑ मैं
शुद्ध बुद्ध मन जाग्रत लेनिन
तुमको नमन करु॑ मैं।३।
भारत की वह छड़ी
कहीं पर पड़ी हुई है
भारत की थाती छाती में
मित्र रुप में जड़ी हुई है
मूल्यवान उपहार हमारा
योगी अंगीकार करो
बड़ी परिश्रम से लाये हैं
यह सेवा स्वीकार करो
स्वतंत्रता की अभिलाषी
सेवा को नमन करु॑ मैं
शुद्ध बुद्ध मन जाग्रत लेनिन
तुमको नमन करु॑ मैं।४।
पाकर आशीर्वाद तुम्हारा

लगे जगाने जनगण सारा
स्वतंत्रता का वीर सिपाही
तन मन धन सबको दे मारा
फैल गयी आलोक-रेख
अंगड़ाई अब चहु ओर देख
जय लेनिन जय गांधी करती
क्रांति शांति की शोर देख
भारतीय जनगण की इस
शिरकत को नमन करु॑ मैं
शुद्ध बुद्ध मन जाग्रत लेनिन
तुमको नमन करु॑ मैं।५।
लगा जगी है लाल भवानी
दौड़ लगाती है तूफानी
रख लो माँ भारत का पानी
यत्र तत्र कहनी कुर्बानी
तोड़ दासता का कारा
नूतन इतिहास बनाने को
स्वच्छ करो धरती भारत की
नव स्वतंत्रता आने को
स्वतंत्रता की जननी
कुर्बानी को नमन करु॑ मैं

शुद्ध बुद्ध मन जाग्रत लेनिन
तुमको नमन करुँ मैं। ६।
मैत्री मूल्यवान निधि है
कुछ खोकर इसे बचाना है
मित्र देश की धरती को
पावन सुशहाल बनाना है
लेनिन की यह पुण्य धरोहर
सदा सुरक्षित बनी रहे
रहें एकजुट मित्र देश
तो शांति सिन्धु में सनी रहे
शांति सिन्धु की इस मैत्री-
सेतू को नमन करुँ मैं
शुद्ध बुद्ध मन जाग्रत लेनिन
तुमको नमन करुँ मैं। ७।
धन्य सोवियत भूमि जहां
लेनिन महान अवतीर्ण हुए
मार्क्सवाद की व्यावहारिक
शिक्षा में जो उत्तीर्ण हुए
दिव्य ज्ञान से विभूषित
वह देश प्रथम आजाद हुआ
सुन्दर सोवियत धरती पर
प्रथम समाजवाद हुआ
समाजवाद की जननी
उस भूमि को नमन करुँ मैं
शुद्ध बुद्ध मन जाग्रत लेनिन

तुमको नमन करुँ मैं। ८।
वह नमस्य है धूल
जहाँ पर बैसे फूल उगा करते
जिनके पुण्य पराक्रम से
पावन इतिहास बना करते
जिसके रूप गन्ध से जनता
सदा सुवासित होती है
शोषित और उपेक्षित जनता
भी सम्मानित होती है
विश्व सर्वहारा शिक्षक
लेनिन को नमन करुँ मैं
शुद्ध बुद्ध मन जाग्रत लेनिन
तुमको नमन करुँ मैं। ९।

—:०:—

शाँति

बिस्तर पर मैं सोया था जब
निज सपनों में खोया था तब
एक परी उतरी ऊपर से
छुई मुई सी सत्वर गति से
पड़ी पास मेरे जाकर
गड़ी लाज से वह आकर।

मैंने उसको जाना था
पहले से पहचाना था
इसीलिये तो आना था
लक्ष्य उसे तो पाना था
दूर देश से आयी थी
बढ़ी चढ़ी तरूणाई थी
वह संदेशा लाई थी
मुझको भी वह भायी थी।

कहती उसको चैन कहां
सोये वैसी रैन कहां
भटक रही है यहां वहां
जग कब समझेगा उसे यहां

अमरीका हो आयी है
घोर अनादर पायी है
पाक ब्रिटिश जापान फ्रांस में
उसकी वहां सफाई है।

कारण सबमें जमी नहीं
अस्त्रों में वह रमी नहीं
रूस चेक अफगान आदि में
रहने को है कमी नहीं।

उसकी प्रबल कामना है
सब पूर्वाग्रह से मुक्त रहें
जीने का अधिकार के लिये
सभी राष्ट्र संयुक्त रहें।

भारत माता प्यारी है
उससे उसकी यारी है
सोवियत भूमि न्यारी है
दोनों की एक क्यारी है।

उसकी ऐसी भूल है
उगता समरस फूल है
अलग मानना भूल है
नहीं तो आगे शूल है।

धीरे से शान्ति बोली
मन के संभ्रम को खोली
मेरे कन्धे पर हो ली
लगी बनाने हम जोली।

कमर कसा तैयार हुआ
पीछे मेरा यार हुआ
ज्योंहि सीमा पार हुआ
त्यों निर्भय संसार हुआ।

यह एक बड़ी चढ़ाई है
लगती एक लड़ाई है
अगर जीतता मंजिल तो
मिलती बहुत बड़ाई है।

नमन किया बुद्ध को मैं
नेहरू का आशीर्वाद लिया
इन्दिरा को नत मस्तक हो
लेनिन का पावन चरण छुआ।

अपनी बनी योजना देखी
जो बिल्कुल ही अंधी थी
पर विश्वास हुआ इस पर
जो बीस वर्ष की संधी थी।

एक हाथ में शंख लिया
और लिया दूसरे में चक्र
शांति और संघर्ष साथ ले
जग का किया महाचक्कर।

गुट निरपेक्ष सभी देशों ने
बढ़ कर मेरा साथ दिया
शांति क्रांति अब भ्रांति नहीं
सबने मिल इसे सनाथ किया

शांति शक्ति का पलड़ा भारी
सबने मिलकर किया वही
दिया चुनौती युद्ध पक्ष को
वह भी आये मिले यही।

बहती रही रक्त की धारा
प्रणय-धार भी आज बहे
अगर चेतना नहीं हुई
तो यह दुनिया शायद ही रहे।

—:०:—

इन्दिरा

१

भागीरथी विमल जल जैसी
प्रियदर्शिनी वीर इन्दिरा थी
नमन करो पावन विभूति को
जगती की वह प्रियंबदा थी।

२

जिसके शीतल जल में नित
हम अवगाहन करते थे
धर्म जाति का भेद भूल
मानव वाहन करते थे।

३

इन्दिरा वह क्यारी थी
जिसमें वर्ण-वर्ण के फूल खिले
शांति कुमुद, राजीव सदृश
संजय युवा सा मूल खिले।

४

धन्य गोद इन्दिरा की जिसमें
राजीव जैसा युवा पला
जिसके दिव्य गुणों से भूषित
होकर जग का किया भला।

५

इन्दिरा तेरी कुर्बानी से
सिसक रहा है देश हमारा
लाल खून से लिखा जाता
क्या जाने इतिहास बेचारा।

६

सच ही कहा खून का कतरा
यहां रंग लायेगा
देश इसी से बिलसित होता
जग को यह भायेगा।

७

भारत साम्राज्यी कुचक्र का
देखो आज शिकार हुआ
सावधान रहना आगे
बलिदानी का हुकार हुआ।

भोर हुआ फैली किरणें
अब दिग दिगन्त में शोर हुआ
जल में अब राजीव उगा
सौरभ से जन मन मोर हुआ।

९

शासन के आसन पर बैठा
शासक एक किशोर हुआ
अभिनन्दन तुम करो युवा की
भारत को अब जोर हुआ।

१०

त्वरित गति भारत की होगी
जन का भाग्य संवारेगा
जड़ित दैन्य पीड़ा से भारत
हिंसा मूल कबारेगा।

११

पुनर्गठन की आस लिये
नव चिन्तन का विश्वास लिये
प्रगति मार्ग पर बढ़ता जाये
जन-जन का अनुराग लिये।

२८

माँ इन्दिरा के ज्योति-कलश को
जहां-जहां पहुंचाया है
जग-जननी के जोश-ओज ने
जन को खूब जगाया है।

२९

जिसने झुकना सिखा नहीं
मजदूर आग बन जायेगा
शांति-क्रांति को चाह लिये
सारी दुनियां को जगायेगा।

३०

इन्दिरा जी तो चली गयीं
पावन इतिहास बना कर
अपनों से जो छली गयीं
भावी इतिहास सुना कर

३१

जाओ इन्दिरा याद रखेंगे
हम कृतज्ञ भारत वासी
जिसके दिव्य शौर्य से पूरित
शांति-मुक्ति के अभिलाषी।

❀

भारत-सोवियत महोत्सव (८७-८८)

शांति मर्म से सिक्त देश दो विहँस रहे हैं।
भावी जग विन्यास हेतु दो तरस रहे हैं॥
अपनी क्रांति आदर्श हर्ष से वरण कर रहे।
जग हिंसा-प्रतिहिंसा का वे हरण कर रहे॥
खोल द्वार खिड़की संस्कृति का झांक रहे।
वे अपनों की भली प्रकृति को टाँक रहे॥ १॥
दोनों देश जगत में हैं आदर्श बन रहे।
अपनी प्रकृति से जग में उत्कर्ष बन रहे॥
भारत-सोवियत दोनों देश शांति के योद्धा।
है उनका इतिहास शांति के अडिग पुरोधा॥
गोर्बाचेव महान शांति को वहन कर रहे।
नव चिन्तन प्रकाश पा सब कुछ सहन कर रहे॥ २॥
भारत-रूस मित्र बन जग में सदा चल रहे।
शांति-मार्ग के व्यवधानों को सदा दल रहे॥
दो देशों के जनगण की यह सन्धि अमर हो।
हिले सिन्धु काँपे वसुन्धरा महा सफर हो॥
दुर्बल भाग्य नहीं भारत का मित्र प्रवर है।
दो देशों का मुखर शांति का जग में स्वर है॥ ३॥

यही कामना है मैत्री हो कभी न खंडित।
शांति मना संपृक्त बनें महिमा से मंडित॥
जिसकी कला भली हो आदर करें सभी जन।
करें परस्पर प्रेम नेम का पालन जनगण॥
होगी संस्कृति की अनुकृति से जग रूपान्तर।
पा यथार्थ को जड़ जग का विहँसे अभ्यन्तर॥ ४॥
महा प्रलय का काल व्याल सा बोल रहा।
महायुद्ध की शंका में जग डोल रहा॥
पर जननी का जला हृदय यह बोल रहा।
शांति पूर्ण सह जीवन को यह खोल रहा॥
पुनर्गठन के गलियारे में नहीं कहीं अब पोल रहा।
मानवता परिवेश खुलेपन का अभियानी बोल रहा॥ ५॥
दो जनगण की मैत्री को ये महा महोत्सव बता रहे।
गहन रूप है जनवादी भावों का उत्सव बता रहे॥
सावधान रहना है उनको जो दुर्बल को सता रहे।
ऐंठ रहे हैं अस्त्रों पर जो जग को धत्ता बता रहे॥
आज नहीं दो सरकारों का यह उत्सव है।
उत्सव है यह जनगण का अद्भुत अभिनव है॥ ६॥
इस उत्सव में मेहनत का प्रतिफल प्रदर्श है।
श्रम का तप का जन का जो उत्तम विमर्श है॥
यह नूतन विज्ञान ज्ञान जन का जो उत्तम विमर्श है।
जीवन का अर्जन गर्जन जन का उत्कर्ष है॥

सुफल व्यवस्था का प्रतिफल जन का प्रकर्ष है।
सामूहिक सद्भाव बना अनुपम प्रदर्श है॥ ७॥
हुग्रा उजागर मेहनत कश का श्रम उत्सव में।
बहुँरंगी है कला संस्कृति का रुपोत्सव में॥
अर्पित है यह अक्तूबर क्रांति महान को।
हिला दिया जिसने मोड़ा बदला जहान को॥
विश्व पटल पर हुआ एक नव युग का उद्‌भव।
नमन करो लेनिन महान की कृति है अभिनव॥ ८॥
अक्तूबर की साख पाँख भारत सुदेश की।
किया सफाया अंग्रेजी सत्ता नरेश का॥
वर्षगाँठ है चालीसवीं स्वाधीन देश की।
जिसे समर्पित है उत्सव यह महादेश की॥
एक राष्ट्र, भाषा अनेक इस महादेश की।
बहुँरंगी संस्कृति शोभित भारत स्वदेश की।. ९॥
आज प्रश्न प्रस्तुत है दुनिया में जीने का।
अण्वास्त्रों से काँप रहा धड़कन सीने का॥
मूल मंत्र हैं बता रहे उत्सव जीने का।
मंत्र बना दो महादेश का अमिय एक पीने का॥
बहे प्रणय की धार यही सन्मार्ग सदा जीने का।
श्रम सम्मानित मानव मानित पावें मूल्य पसीने का॥१०॥
सबके लिए एक, एक की सब हों अर्पित।
जीने का है सार यही सबको हो गर्हित॥

१२

माँ इन्दिरा की शक्ति लिये
जन-जन में अनुरक्ति लिये
शांति मार्ग पर बढ़े चलो
देशों की महती पंक्ति लिये।

१३

माँ इन्दिरा निज लाल रक्त से
सींच बीच से चली गयी
यह इतिहास नहीं भूलेगा
तुम अपनों से छली गयी।

१४

तुमने कहा सोवियत संघ को–
'वीर जनों का घर है'
बना रहे वह मित्र सदा
मित्रों में महा प्रवर है।

१५

हम कृतज्ञ पावन विभूति के
पथ पर सदा चलेंगे
खड़ा हुआ व्यवधान अगर
तो उसको वहीं दलेंगे।

१६

तेरे चिर सपनों का भारत
कभी न होगा खंडित
बना रहा इतिहास नया
नूतन महिमा से मंडित।

१७

नाति दूर वह लाल किरण है
नित्य जगाने वाली
कलुष युक्त अन्धे उर में
विश्वास जगाने वाली।

१८

जग दुर्दिन संकट में नित
वह आस जगाने वाली
भारत की खुशहाली का
व्यवधान भगाने वाली।

१९

लाल चौक में खड़ी इन्दिरा
जन को सदा जगाती है
भारत-रूस मित्र की स्मृति
जन को सदा सुहाती है।

२०

पावन लाल चौक का स्थल
सोवियतों की छाती है
जहाँ खड़ी पावन इन्दिरा
बन भारत की थाती है।

२१

नमन करो इस जग-जननी को
जनगण जोश जवानी को
जगी रहे ज्योति धरती पर
शांति-क्रांति कुर्बानी को।

२२

लिखता जो इतिहास सदा
निज लाल रुधिर के पानी से
बनता सदा महान जगत में
नमन करो बलिदानी को।

२३

बने प्रशस्त पुण्य पावन पथ
भावी जगत जवानी से।
सिक्त शांति का आंचल बनता
भारत माँ के पानी से।

२४

जिस धरती ने रक्त पिया
वह चिनगारी बन भड़केगी
यह नूतन बिश्वास लिए
तुम जाग जाग अब भड़केगी।

२५

करो अनुगमन रणचण्डी का
उत्सुक है वह चलने को
सत्वर गति से मरकर भी
दुनियां की नियति बदलने को।

२६

आज युद्ध की ज्वाला में
लगती है दुनियां जलने को
उत्सुक हैं पीड़ित जन अब
मरकर निज नियति बदलने को।

२७

शासन-रथ की दिशा बदल
नव मार्ग तुम्हें चुनना होगा
दुःखी दीन संतप्त जनों का
स्वर तुमको सुनना होगा।

बने सभ्य शिक्षित सुविज्ञ जन उत्सव अर्पित।
बहुँरंगी यह कला-संस्कृति की सेवा अर्पित॥
जग में जहाँ जगी जनता रोती उत्कंठित।
पूर्वाग्रह से युक्त भले ही होते कुंठित॥ ११॥

—:०:—

आ जटायु आ

जन्म ले जग में पुनः तुम आ जटायु आ
विश्व के संतप्त जन तुमको पुकारें आ
शस्त्र सज्जित हों निलज्जित आचरण करते
वे सिसकती शांति सीता का हरण करते
मूक हो क्यों देखता है क्रांति का स्वर गा
जन्म ले जग में पुनः तुम आ जटायु आ। १।

कौन कहता है जरा जर्जर जटायु तू
लोक हित परित्राण में आयु गँवाया तू
हो रही जबरन सती सीता बचाने आ
जन्म ले जग में पुनः तुम आ जटायु आ। २।

आज रावण काटता है शस्त्र से पर को
आण्विक भय से दबाता शांति के स्वर को
हों समन्वित राष्ट्र रक्षा में बनाने आ
जन्म ले जग में पुनः तुम आ जटायु आ। ३।

गगन में भी हैं खड़े कुछ होड़ लेने को
अस्त्र को नभ में धरा से मोड़ देने को
जन विवश जग छोड़ देने को बचाने आ
जन्म ले जग में पुनः तुम आ जटायु आ। ४।

आज हिंसा के अनल में सृष्टि रोती है
हो रही अनरीति बर्बर प्रीति सोती है
दम्भ के बर्बर चरण को रोक लेने आ
जन्म ले जग में पुनः तुम आ जटायु आ। ५।

जो समर में प्राण को निज अमर करते हैं
पी गरल शिव शम्भु का निज नाम धरते हैं
है जगा इतिहास जग का यह बताने आ
जन्म ले जग में पुनः तुम आ जटायु आ। ६।

न्याय का मर्दन भला कब तक चलेगा
आय का अर्जन हमें कब तक दलेगा
कब श्रमिक गरिमा बढ़ेगी दिन बताने आ
जन्म ले जग में पुनः तुम आ जटायु आ। ७।

जग-विदित जब दुष्ट रावण ने हरी सीता
वन्य पशु-पक्षी समर्पित हेतु अनरीता
सर उठाया सर कटा कैसे बताने आ
जन्म ले जग में पुनः तुम आ जटायु आ। ८।
किसने बनाया सेतु सीता की सुरक्षा में
कब बनेगा सेतु शांति की सुरक्षा मे
सब मिलें सेतु बनायें यह बताने आ
जन्म ले जग में पुनः तुम आ जटायु आ। ९।
विश्व-मैत्री-सेतु जब सुदृढ़ रहेगा
हिंस्र गढ़ साम्राज्य का निश्चय ढहेगा
मिल चलें लघु या गुरु जग को बताने आ
जन्म ले जग में पुनः तुम आ जटायु आ। १०।
शांति का प्रहरी लखन आहत न हो
क्रांति का कपिराज मर्माहत न हो
हो अगर व्यवधान कपि पर्वत उठाने आ
जन्म ले जग में पुनः तुम आ जटायु आ। ११।
शांति के संधान में शबरी तरेगी कब
क्रांति के व्यवधान में लंका गिरेगी कब
कब मिलेगी मुक्ति विभीषण बताने आ
जन्म ले जग में पुनः तुम आ जटायु आ
विश्व के संतप्त जन तुमको पुकारें आ। १२।

—:०:—

इन्द्र धनुष

सात रंग की इन्द्र धनुष है बैंनी आह पिनाला
जो नभ में रहता बनता अनुपम सौंदर्य निराला
जिसकी आभा कभी न छिपती मेघों की पाँखों से
देख रहा है जिसे विश्व निज निर्निमेष आँखों से

सम अन्तर पर सभी रंग सुनभ में फैल रहे हैं
देख खुलापन नहीं कभी भी मन में मैल रहे हैं
नहीं रंच है भिन्न परस्पर का अभ्यन्तर उसका
आँख मूंद लेता रवि तो होता छू-मन्तर जिसका
रवि-प्रकाश ही प्राणवान है उसे बनाता माता
सहचर बन जग में चलता जन को दिखलाता गाता
विश्व गगन की शोभा है सबको मिलकर जीने में
स्थिर शांति शोभा पाती है प्रणय-पयस पीने में
देख अवस्थित नभ में धनु को जन की आशा जगती है
पल में करूणा की वर्षा से मनु-प्रत्याशा पगती है
गोल बना प्राचीर गगन को इन्द्र-धनुष हैं घेर रहे
देख रहे धरती के जन अपने में छवि को हेर रहे
देख व्योम की रक्षा में ये धनुष कलेवर खपा रहे

महा गगन की खुशहाली में अपने तन को तपा रहे
तपो-तपो ऐ धनुष व्योम में इन मेघों को छंटना है
छंटे नहीं ये मेघ अगर तो पूरे विश्व को पटना है

मिटे नहीं अस्तित्व व्योम से धनु मेघों के साथ रहे
पाता रहे रश्मि रवि से धरती भी सदा सनाथ रहे
अब वह दिवस निकट ही है जब इन मेघों को मिटना है
गोलबन्द कर दुनिया को मेघों से हमें निबटना है

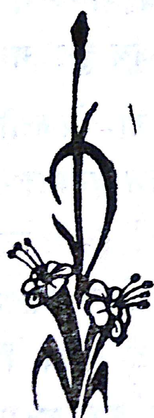
समय आ गया है मानव मानव से कभी न बैर करे
धरती क्या बात करु अब दूर गगन तक सैर करे

सावधान हो मेघ तुम्हारी बिजली पानी बनती है
देख जगा अन्तस् को निज दुनिया करूणा में सनती है
धरा गगन के बीच कोई व्यवधान न रहने पायेगा
आज विश्व का मानव ही नभ तक सोपान बना`गा
जगी जगत की जनता ही नूतन चिंतन अपनाती है
बसे विश्व के व्यवधानों का उन्मूलन कर पाती है
अरुण बिम्ब-प्रतिबिम्ब लिये अबलम्ब सदा अपनाती है
विश्व-भावना की जनता भूतल को स्वर्ग बनाती है

हल्का रहे मेघ जिससे अस्तित्व तुम्हारा बना रहे
भौतिक और संस्कृति की प्रगति में सारा जग सना रहे

काश !समानान्तर रंगों का चमन ये दुनिया बन पाती
अरुण रश्मिसें रश्मि न होकर अमन जगत में जन पाती

अन्न और प्रच्छन्न ज्ञान से सारा जनगण खिल पाता
धरती पर खुशहाली का साम्राज्य सभीको मिल पाता
अस्त्र-दुर्ग को नष्ट करो की वाणी सबकी चलती है
समय देख अब निर्झरणी चलने को आज मचलती है
अच्छे हैं आसार जगत के क्रांति कार्य मे देर न हो
शांति कार्य के निष्पादन मे देखो कहीं अंधेर न हो



सरस्वती वन्दना

वीणा वादिनि जय हो
ज्ञान शिखा से आलोकित जग
जीवन रथ का हो प्रशस्त मग
प्रगति मार्ग पर बढ़ता जा पग
सारा विश्व अभय हो
वीणा वादिनि जय हो

जग पीड़ित असि की ज्वाला में
डूबा मजहब की हाला में
पलता शोणित की नाला में
जन-मन-ज्योति उदय हो
वीणा वादिनि जय हो

बढ़ते चरण दम्भ के निर्भय
रोक बना करुणा से रसमय
गूंजे गान-मान तव नव लय
चाहे महा प्रलय हो
वीणा वादिनि जय हो

नित्य उतारूं तेरी आरति
गूंजे जग में विश्व-भारती
तू हो दीनजनों को तारति
बहा शांति का लय हो
वीणा वादिनि जय हो

ज्ञान मान से पूर्ण हृदय हो
अन्ध-मुक्त करूणा से मय हो
गूंजू स्वर जग जहाँ जहाँ अनय हो
जग में शांति-विजय हो
वीणा वादिनि जय हो



आधुनिक दोहे

देख तमाशा अस्त्र का मन मेरा अकुलाय।
हुआ चाहता नष्ट जग जल्दी करो उपाय।१।

सुना आण्विक अस्त्र का काट नहीं है कोय।
मारक-धारक सब मरै बचे न कोई रोय।२।

नागासाकी बन गया मरूभूमि का क्षेत्र।
दुहराते क्यों काल को सबको करते खेत।३।

जियो सभी मिल कर यहाँ भले व्यवस्था भिन्न।
भला तभी होगा सुनो क्यों करते सिर छिन्न।४।

धनी या कि निर्धन जगत करें सभी सुख-भोग।
जगती में मानव नहीं कहीं रहे दुःख-भोग।५।

होड़ रहा अब तक यहां अणु अस्त्रों को जोड़।
सदा शांति का होड़ ले अब हिंसा को छोड़।६।

सब योनी में श्रेष्ठ है मानव की ही जाति।
लिप्सा पूंजी की बना मानव करता घात।७।

जगत संवारो स्वेद से भला इसी में होय।
बुद्धि का उपयोग यह जग में मरे न कोय।८।

मेहनत कश का मान हो ज्ञान सभी को होय।
यह नूतन विज्ञान है चिन्तन सबको होय। ९।
श्रमिक वर्ग पूजित जहाँ स्वर्ग वहाँ पर होय।
तिरस्कार पाते जहाँ सारी जनता रोय। १०।
जग-पालक मिलकर रहें चालक ही पर नाव।
हुआ परस्पर युद्ध तो जग हारेगा दांव। ११।
धारण कर कर में खड्ग क्यों करता भयभीत।
नहीं जानते शांति है साम्यवाद की रीति। १२।
शांति-शंख कर मे लिये खड़ा मुरारी आज।
सदा बताता जगत को मिल जीने का राज। १३।
गोवर्द्धन-सा आण्विक अस्त्र जगत के साथ।
इसे उठाना साथियों सभी लगाकर हाथ। १४।
लौह लेखनी से नहीं लिखो निज इतिहास।
उत्तरजीवी बन जगा मनु-वंशज की आस। १५।
उदधि गरजता देखकर पूछा तुम हो कौन।
हृदय हमारा बिंध रहा पुन; रहूं मैं मौन ?। १६।
थाती हूं मैं विश्व की छाती में हैं लोग।
रत्नाकर का विश्व के सभी करें सुख-भोग। १७।
जल पंजर गत-से हुए महा उदधि के नेत्र।
-बोल उठा सागर गरज रक्तिम उसके नेत्र। १८।

अश्रु पोंछ कर से किया पावन जाल का स्पर्श।
हिन्द महासागर रहा सदा हिन्द का हर्ष। १९।
नारा अब जय हिन्द का गया अधर पर गूंज।
दिया सुनायी विश्व में जय-जय की अनुगूंज। २०।
मुक्त करेंगे हम सदा रत्नाकर की राह।
शांति-सिन्धु बन कर रहे यह अंतिम है चाह। २१।
सिन्धु भलो खिड़की बने हवा चतुर्दिक आय।
हिन्द शान्त प्रशान्त बन विश्व मिलन को छाय। २२।
एक दिन ऐसा आयेगा सभी मिलेंगे लोग।
कर्म जगत में आयेगा सभी खिलेंगे भोग। २३।
जो जन जड़ हैं आलसी शोषण है आधार।
पावेंगे जग में सदा दुःख का पारावार। २४।
आलस ऐसा कोढ़ है जो जग को ही खाय।
इसे अगर छोड़ा नहीं फिर पीछे पछताय। २५।
टिका सदा भगवान भी आलस का आधार।
बैठ निकम्मे लोग ही करते जन पर वार। २६।
मेहनत जागेगा कभी छोड़ेगा जेहाद।
फाड़ आलसी-वक्ष को कर देगा बर्बाद। २७।
जगी जहाँ जनता श्रमिक आँख उठाकर देख।
दिया भगा तम को वहाँ उगा अरुण सी रेख। २८।

जगत तवा सा जल रहा अण्वाग्नि से आज।
हुआ चाहता नष्ट जग किस पर करता नाज। २९।
कठिन परीक्षा की घड़ी आ पहुंची है आज।
मानव के अविवेक से संकट में सुख-साज। ३०।
सद्‌विवेक ही मनुज का युद्ध बचाये आज।
सभी राष्ट्र मिल कर जियें यही शांति का राज। ३१।



किरण

१

किरण जगत को जगा रही है
जाग-जाग जगती के लाल,
भोर हुआ खग शोर हुआ है
शोर मचाता उठ जा लाल।

२

देख कली निज घूंघट खोले
दिखलाती है अपना भाल,
लुटा रही है सौरभ अपना
सपना तोड़ जगो हे लाल।

३

अभिनन्दन करती है रवि का
छवि का अवलोकन कर लो,
मचल रही है मन की कलिका
कली अंक में रस भर लो।

४

मनस्ताप को दूर हटा दो
रश्मि-ताप में तप लो लाल,
देख सरोवर का जल बनता
सनकर अरुण किरण में लाल।

५

लाल आग का गोला बढ़ता
चढ़ता नभ में आता है,
जीर्ण शीर्णता के दुर्गों को
ढाह बराबर करता है।

६

पूर्वाग्रह से युक्त बनाकर
युक्त किरण से करता है,
बढ़ो-बढ़ो ए लाल किरण तुम
जग अभिनन्दन करता है।

७

दीन जनों की आँख लगी है
पाँख फड़फड़ाती आओ,
हाड़-मांस भी कांप रहे है
छाँह मिटाती तुम आओ।

८

अधर लाल लज्जा से जब तक
मज्जा शीत कंपायेगा
बढ़ो बनो तुम किरण सयानी
रूप जवानी भायेगा

९

हमें आस विश्वास तुम्हारी
जग का रूप संवारोगी,
अंधकार को दूर भगाकर
आलस को ही मारोगी।

१०

अरुण शिखा से अनुरंजित कर
मंडित जगति को करती,
प्रीति-नीति से सदा रिझाती
अली-कली में रस भरती।

११

पली सरसि में खिली कमल की
कली किरण को बुला रही,
अरुण रश्मि के दर्शन को वह
खिला पिला कर जिला रही।

१२

जियो-जियो ऐ कली वली बन
छली चतुर्दिक घेरेंगे.
अंधकार के चोर भोर से
कलियों का मन फेरेंगे।

१३

सावधान हो कली अंक से
अली न कोई खो जाये;
वात - घात से बची रहो तुम।
ग्रस्त्र न तुमको ले जाये।

१४

सदा चूम किरणों को यों तुम
घूम-घूम कर हिला करो,
पिला-पिला कर निज सौरभ को
जन-जन से तुम मिला करो।

१५

सदा गले का हार बनी तुम
देवों के सिर चढ़ा करो,
देखे रूप अनूप तुम्हारा
जग-द्वेषी को पढ़ा करो।

१६

धरती की क्या बात किरण तो
वरुण अंक में जाती है,
शत दल पर शोभित दम्पति को
प्रतिबिम्बित कर आती है।

१७

हो जग में नित नव विहान भी
चिन्ता सदा लगी रहती,
धरती के आँसू पोंछे वह
इसमें सदा जगी रहती।

१८

सभी चराचर जगती का मुख
हों प्रसन्न विचरें जग में,
अज्ञ, अशिक्षित, पीड़ित जनता
धरें कदम हँसते मग में।

१९

पाकर के स्वर्णिम विहान जग
गूँजेगा नारा श्रम का,
कर्म-धर्म का मर्म बनेगा
तन का और बचन मन का।

२०

यही चाहता सदा हिरण वन
किरण चौकड़ी भरा करे,
किया कोई इसमें छल जग में
तो रावण-सा मरा करे।

२१

स्वर्ण-रश्मि परिमल पराग से
पुष्प-मांग को भरा करे
कली-अंक का चाहक मधुकर
सा कवि का मन तरा करे।

२२

देख-रेख स्वर्णिम विहान जग-
ईर्ष्यालू जन जला करे
भला करे जगती में जन की
पीड़ा जग की टला करे।

२३

बढ़ो शांति के रण में जग के
किरण विश्व में छानी है,
यही आस विश्वास जनो का
तुम धरती का पानी है

-:०:-

रचयिता- रामायण सिंह

जन्म- १ जनवरी १९३९

शिक्षा- एम० ए०, डिप० इन-एड०

अब तक छिटपुट रचनायें प्रमुख पत्रिकाओं में प्रकाशित

कृतियाँ- शांति-दूत (कविता-संग्रह)

संप्रति- उच्च विद्यालय अखलासपुर में शिक्षक

मुद्रक:-कैलाश प्रेस, बुलानाला - वाराणसी-२२१००१